मुर्गी पालन मुनाफे वाले व्यवसायों

मुर्गी पालन अच्छे मुनाफे वाले व्यवसायों में से एक है। मुर्गी पालन अण्डा और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। इनके लिए अलग-अलग प्रजातियों का चयन करना होता है। इस व्यवसाय की खासियत है कि इसे कम लागत से शुरू किया जा सकता है और इसमें कमाई जल्दी शुरू हो जाती है, क्योंकि मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियां 32 से 40 दिन में तैयार हो जाती हैं।

चूजों का चुनाव:

ब्रायलर पालन में चूजों का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण होता है। चुस्त, फुर्तीले, चमकदार आंखों वाले तथा समान आकार के चूजे उत्तम होते हैं। स्वस्थ चूजों की पिण्डली या पैर की खाल चमकदार होती है। इनके वजन में अन्तर न हो क्योंकि वजन में जितना अन्तर होगा आमदनी उतनी घटती जाती है। चूजे किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थाओं से खरीदे जा सकते हैं।

आवास की व्यवस्था:

किसी भी पालन में आवास की व्यवस्था जरूरी होती है। यह पालन विशेष तौर पर चूजों की ब्रूडिंग क्रिया पर निर्भर करता है। कम जगह में ज्यादा से ज्यादा चूजों को पाल सकते हैं।चूजों को ब्रूडर में रखने के बाद इस बात का अवलोकन करना चाहिए कि तापमान उनके लिए उपयुक्त है या नहीं क्योंकि तापमान की कमी और अधिकता से चूजों की बढ़वार पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शेड में अधिक भीड़ होने से गर्मी बढ़ेगी और मुर्गियों में हीट स्ट्रोक का अंदेशा बढ़ेगा। मुर्गियों के लिए ब्रॉयलर फार्म में एक वर्ग फीट स्पेस प्रति चूजे के अनुसार स्थान दिया जाता है और लेयर के लिए 2-2.5 वर्ग फीट प्रति बड़ी मुर्गी

के हिसाब से जगह की जरूरत होती है। यानि 30 फीट x 100 फीट (कुल 3,000 वर्ग फीट) के कमरे/हॉल में मुर्गी पालक 3,000 ब्रायलर और 1,200 से 15,00 लेयर रख सकते हैं।

गर्मी में मुर्गी पालन:

गर्मी में मुर्गी पालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि मौसमी उतार-चढ़ाव से इनकी मृत्यु दर बढ़ सकती है। मुर्गियों में अधिक मृत्यु दर होने से किसान या मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है।

इसके अलावा, छत की गर्मी कम करने के लिए छत पर धान की पुआल या घास आदि डाल दें या फिर छत पर सफेदी करा दें। सफेद रंग ऊष्मा को कम सोखता है, जिससे छत ठंडी रहती है।आधुनिक मुर्गी फार्म में गर्मी से बचाव के लिए स्प्रिंकलर या फॉगर प्रणाली भी लगी होती है, जिससे पानी की फुहारें निकलती रहती है। स्प्रिंकलर के साथ पंखे भी जरूर लगे होने चाहिए और कमरे की खिड़की भी खुली होनी चाहिए, जिससे कमरा हवादार और ठंडा रहेगा।

शेड की खिड़कियों पर तेज गर्मी के समय टाट को गीला करके लटका देते हैं।अगर किसी मुर्गी में गर्मी लगने के लक्षण दिखाई दें, तो उसे धीरे से उठा कर पानी से एक डुबकी देकर छांव में रख दें और स्वस्थ होने पर वापस बाड़े में डाल दें। यह प्रक्रिया तुरंत की जानी आवश्यक है। देर होने पर मुर्गी मर सकती है।

करीब 42 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर ये चूजे आसानी से रह लेते हैं। उनका कहना है कि वयस्क मुर्गियों को गर्मी में अधिक परेशानी होती है। अंडे देने वाली मुर्गियों (लेयर या एग्गर) में तापमान सहने की क्षमता मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियों (ब्रायलर) की तुलना में अधिक होती है।

42 डिग्री सेंटीग्रेड से ऊपर जाने की स्थिति में मुर्गियों के पानी में एलेक्ट्रल एनर्जी मिला दें। इससे मुर्गियों को गर्मियों से निपटने में मदद मिलेगी। उनका कहना है कि आंगन में पाली जाने वाली मुर्गियों के लिए अगर संभव हो तो पानी का नल खुला छोड़ दें। इससे मुर्गियां अपनी कलगी गीली कर लेती हैं, जिससे पूरे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। इसके अलावा, गर्मियों में कमरे में एक्जॉस्ट फैन लगा कर हवा का सही संचरण रखें। कई किसान

पोल्ट्री शुरू करने से पहले की जरूरतें.

मुर्गी फार्म खोलने से पहले वैज्ञानिक जानकारी लेना अच्छा रहता है। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र से ट्रेनिंग ली जा सकती है। फार्म शुरू करने से पहले बाजार की पूरी जानकारी ले लें। छोटे फार्म से शुरू करें और धीरे-धीरे बड़ा फार्म विकसित करें। चूजे हमेशा विश्वसनीय प्रमाणित हैचरी से ही लेने चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण है सही नस्ल का चुनाव। लेयर फार्म के लिए व्हाइट लैग हार्न और ब्रायलर के लिए व्हाइट कोर्निस या व्हाइट रॉक या फिर इनके क्रास अच्छे रहते हैं।

मुर्गियों चूजों में बीमारियां और उनसे बचाव

मुर्गियों में कई तरह की बीमारियां पाई जाती हैं। जैसे पुलोराम, रानीखेत, हैजा, मैरेक्स, टाईफाइड और परजीविकृमी आदि रोग होते हैं। जिससे मुर्गीपालकों को हर साल भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

उपचार

- चूजों को रखने से पहले शेड को अच्छे से साफ करें।
- गर्मियों में चूजों के लिए पानी के बर्तनों की संख्या को बढ़ा दें। क्योकि गर्मियों में पानी न मिलने से हीट स्ट्रोक लगने से मुर्गियों की मौत हो जाती है।

- जब तेज गर्मी होती है तब शेड की खिड़कियों पर टाट को गीला करके लटका दें। लेकिन इस बात का ध्यान जरूर रखें कि टाट खिड़कियों से न चिपके।
- गर्मियों में पानी में गुड और विटामिन मिलाकर मुर्गियों को देना चाहिए।
- मुर्गियों को दाना इस तरह से दें कि वह शाम तक खत्म हो जाए। अन्यथा उसे फैंके दें।
- यदि मुर्गियों में गर्मी के लक्षण दिखाई दें तो आप उसे उठाकर पानी में एक डुबकी लगवा दें और उन्हें छाव में रखने के बाद शेड में रख लें। इस काम को बहुत तेजी से करें। नहीं तो मुर्गी मर भी सकती है।
- मुर्गियों में कैल्शियम की कमी होने लगती है ऐसे में उन्हें शैल ग्रिट, चूने का पत्थर तीन से चार प्रतिशत और चाक आदि अलग से खिलाना चाहिए।

कृषि विज्ञान केंद्र , रियासी का उददेश्य

- अंडे और मांस में उच्च कोटी के प्रोटीन होना। और उसे उपलब्ध करवाना।
- गुर्गी पालन को बढ़ावा देना।
- गुर्गी पालन में आर्थिक विकास दर सुनिश्चित करवाना।
- ग्रामीण इलाकों में रोजगार के अवसर प्रदान करवाना।
- कम लागत में अच्छी खाद तैयार करना।
-
- **कृषि विज्ञान केंद्र , रियासी** पोल्ट्री गांव **निर्माण** को बढ़ावा दे **रहा है**

कृषि विज्ञान केंद्र , रियासी ,जम्मू कश्मीर